SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भाषा विज्ञान का क्षेत्र : एक अध्ययन

रामेश्वर पाण्डेय, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
संदीप कुमार शुक्ला, हिंदी विभाग, एम. फिल.,
शा. ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
रामेश्वर पाण्डेय, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
संदीप कुमार शुक्ला, हिंदी विभाग, एम. फिल.,
शा. ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय,
रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/07/2021
Revised on : -----
Accepted on : 05/08/2021
Plagiarism : 01% on 30/07/2021

Plagiarism Checker X Originality Report

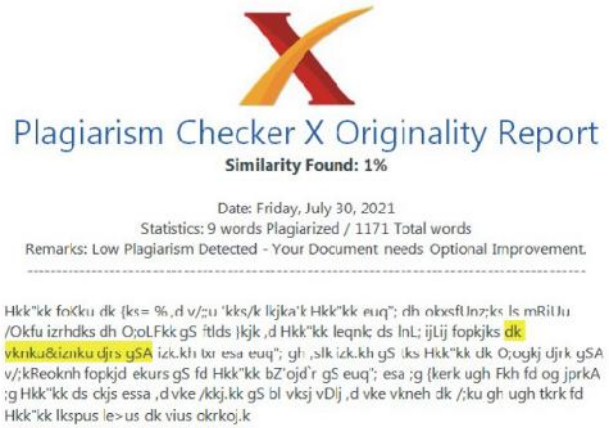

Similarity Found: 1%

Date: Friday, July 30, 2021
Statistics: 9 words Plagiarized / 1171 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Hkk"kk foKku dk {ks= %,d v/;;u 'kks/k lkjka'k Hkk"kk euq"; dh okxsfUnz;ks ls mRiUu /Okfu izrhdks dh O;oLFkk gS ftlds }kjk ,d Hkk"kk leqnk; ds lnL; ijLij fopkjks dk vknku&iznku djrs gSA izk.kh txr esa euq"; gh ,slk izk.kh gS tks Hkk"kk dk O;ogkj djrk gSA v/;kReoknh fopkjd ekurs gS fd Hkk"kk bZ'ojd`r gS euq"; esa ;g {kerk ugh Fkh fd og jprkA ;g Hkk"kk ds ckjs essa ,d vke /kkj.kk gS bl vksj vDlj ,d vke vkneh dk /;ku gh ugh tkrk fd Hkk"kk lkspus le>us dk vius okrkoj.k

शोध सार

भाषा मनुष्य की वागेन्द्रियो से उत्पन्न ध्वनि प्रतीको की व्यवस्था है जिसके द्वारा एक भाषा समुदाय के सदस्य, परस्पर विचारो का आदान–प्रदान करते है। प्राणी जगत में मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो भाषा का व्यवहार करता है। अध्यात्मवादी विचारक मानते है कि भाषा ईश्वरकृत है, मनुष्य में यह क्षमता नही थी कि वह रचता। यह भाषा के बारे में एक आम धारणा है इस ओर अक्सर एक आम आदमी का ध्यान ही नही जाता कि भाषा सोचने समझने का अपने वातावरण को पहचानने का एक ऐसा साधन है जो एक नवजात शिशु के लिए बोध प्रक्रिया का साधन एवं साध्य दोनो ही है। मानव अपने जन्म समय से ही बोध क्षमता को लेकर आता है परन्तु इस सहजात क्षमता का विकास तभी संभव होता है जब उसे एक सर्जनात्मक व्यवस्था रूपी भाषा सीखने का अवसर प्राप्त होता है। इस प्रकार मानव के मन मस्तिष्क की सहजात सृजनात्मकता का प्रतीक साधन एवं साध्य भाषा है।

मुख्य शब्द

भाषा, माध्यम, ज्ञान, जगत, सामाजिक संपर्क.

संसार में कई भिन्न–भिन्न धर्मो एवं जातियो के लोग है परन्तु कोई भी व्यक्ति समूह ऐसा न होगा जिसके पास संप्रेषण के माध्यम के रूप में भाषा का उपयोग न हो। भाषा हमारे समाज एवं संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। किसी सामाजिक व्यवस्था का एक अंग बन कर जब मनुष्य रहता है तो अपनी सभी–छोटी बडी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए वह समाज के अन्य सदस्यो पर निर्भर रहता है और उन सदस्यो के साथ किसी न किसी प्रकार से सम्पर्क स्थापित करना उसके लिए अनिवार्य हो जाता है। सम्पर्क स्थापित करने के लिए सम्प्रेषण के माध्यम तो

और भी है जैसे सांकेतिक भाषा या चिन्हो तस्वीरो द्वारा विचारो का प्रकटीकरण आदि, परन्तु अन्य किसी भी सम्प्रेषण व्यवस्था से अधिक सशक्त एवं सक्षम व्यवस्था यही है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारो को एक सुव्यवस्थित भाषा के रूप में अभिव्यक्ति देता है, मानव की सहजात वृत्ति, सर्जनात्मकता को भी अभिव्यक्ति देता है।

मानव अपनी भाषिक क्षमता का प्रयोग हर समय करता रहता है। इस क्षमता पर इतना अधिक निर्भर भी रहता है परन्तु इस सम्प्रेषण व्यवस्था की ओर उसका ध्यान तभी जाता है जब कोई भाषा कि दृष्टि से असामान्य स्थिति उत्पन्न हो जाये। और यही नही जब मनुष्य एक भाषा के साथ दुसरी भाषा भी सीखता है या उसके सीखने का प्रयास करता है तो वह सामान्य रूप से दोनो भाषाओ के संबंध में तरह–तरह के प्रमुख प्रश्न मस्तिष्क मे आना स्वाभाविक बात होती है। भाषा पीढी दर पीढी चली आ रही एक सम्पत्ति की तरह भी है जो हमारी सामाजिक व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। यदि यह रूढि ना हो तो एक ध्वनिक्रम उस भाषा के बोलने सुनने वालो के सामने एक ही अर्थ नही पहुँचा सकती और अन्ततः सम्प्रेषण व्यवस्था के एक अंग के रूप में इसका प्रयोग सम्भव ही नही हो सकता। भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन और उसके विभिन्न पहलुओ पर विचार करने के लिए निम्नलिखित शाखाओ में बाँटा गया है जो निम्न प्रकार से है:

1. **ऐतिहासिक भाषा विज्ञानः** किसी भाषा का या उसकी विभिन्न व्यवस्थाओ का इतिहास भाषा विज्ञान के ऐतिहासिक पक्ष के अन्तर्गत आता है। ऐतिहासिक भाषा विज्ञान में किन्ही दो या दो से अधिक काल पक्षो में एक भाषा का जो रूप रहा या विभिन्न भाषाओ का जो रूप रहा उनकी तुलना की जाती है। भाषा विज्ञान के इतिहास पर एक नजर डाले तो देखेगे कि 18वी–19वी शताब्दी में ऐतिहासिक भाषा विज्ञान हो भाषा विज्ञान था। बीसवी शताब्दी का प्रारंभ काल क्रमिक एवं समकालिक भाषा विज्ञान में भेद करते हुए आधुनिक वर्णनात्मक भाषा विज्ञान का प्रार्दुभाव रहा।
2. **वर्णनात्मक भाषा विज्ञानः** भाषा व्यवस्थाओ की व्यवस्था है। इन विभिन्न व्यवस्थाओ का वर्णन करते हुए वर्णनात्मक भाषा विज्ञान में बताया जाता है कि किस प्रकार से ध्वनिक्रम रूप शब्द आदि बनते है। भाषा की ध्वनियाँ अर्थ से किन–किन स्तरो पर किस रूप में संबंधित है, बीसवी शताब्दी के प्रारंभ में इस प्रकार के प्रश्नो का उत्तर देना ही वर्णनात्मक भाषा विज्ञान का लक्ष्य माना जाता है।
3. **तुलनात्मक भाषा विज्ञानः** दो भाषाओ की विभिन्न स्तरो पर विभिन्न व्यवस्थाओ की परस्पर तुलना तुलनात्मक भाषा विज्ञान के अन्तर्गत आता है। उदाहरणतः हिन्दी भाषा की ध्वनियो का उच्चारण एवं प्रकार्य भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों से किन–किन रूपों में भिन्न है, यह तुलनात्मक भाषा विज्ञान है।
4. **अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञानः** जिस प्रकार वर्णनात्मक भाषा विज्ञान भाषाओं की प्रकृति का वर्णन करता है, तो अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान इस विश्लेषण एवं वर्णन का विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोग है।
5. **बोध परक या मनोभाषा विज्ञानः** आधुनिक भाषा विज्ञान, मनोविज्ञान एवं मनोचिकित्सा विज्ञान ऐसे तीन विषय क्षेत्रों का प्रादुर्भाव लगभग साथ ही बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ, जिसके माध्यम से मानव मष्तिष्क की सहजात बोधवृत्ति को समझा जा सके। बीसवीं शताब्दी के मध्य में जो भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्त सामने आये उसे ही बोध क्रांति की संज्ञा दी गई।
6. **समाज भाषा विज्ञानः** समाज भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार भाषा का समाजिक–सांस्कृतिक संदर्भगत अध्ययन विश्लेषण समाज भाषा विज्ञान का कार्य क्षेत्र है। समाज भाषा विज्ञान समाजशास्त्र और भाषा विज्ञान के मात्र अवमिश्रण का परिणाम नही है और न ही उसका उद्देश्य समाजिक व्यवस्था और भाषिक व्यवस्था के बीच की स्थिति पर प्रकाश डालना है।

भाषा और समाज

मेरी दृष्टि में भाषा मात्र मनुष्य के मनुष्य होने की पहचान और शर्त है। भाषा के बिना मनुष्य मनुष्य नही होता है और पशु से मनुष्य के विकास क्रम में व एक सीढ़ी है जिसको पार करके वह मनुष्यत्व को प्राप्त करता है। भाषा

के बिना समाज में अपनी अस्मिता की पहचान नही हो सकती। अतः सबसे पहले भाषा अपने आपको पहचाने का साधन है। अगर किसी समाज को उसकी भाषा से काट दिया जाय तो उसकी कोई अस्मिता नही रह जाती है। समाज के साथ जब हम भाषा को जोड़ते है तो उसकी युगधर्मिता की ओर ध्यान देते है क्योंकि हमारे सारे सामाजिक व्यवहार का आधार भाषा है, और भाषा है सामाजिक व्यवहार के लिए, अतः भाषा और समाज का नितान्त गहरा संबंध है। समाज की हर झलक सुख–दुःख, पीड़ा, अवसाद, गति और मूल्यों मे सलिष्ट संस्कृति भाषा मे बोलती है यही भाषा का समाजशास्त्र है।

निष्कर्ष

किसी भी विषय में या भाषा के संदर्भ मे दृढ़ता के साथ जमी हुई पुरानी मान्यताओ को बदलना आसान नही होता यह बात भाषा विज्ञान पर और अधिक लागू होती है। भाषा का विश्लेषण कैसे किया जाय और उसका समाज और उसके अध्ययन में किस प्रकार समन्वय स्थापित करना है इसका विभिन्न भाषा विज्ञानियों द्वारा हमेशा से वाद–विवाद का विषय रहा है। परन्तु विश्वास यह भी है कि इस दिशा में लगातार नये–नये युक्तियों का विकास संभव होगा जो हमारी भाषा और समाज पर पड़ने वाले प्रभावों और उसके परिणामों पर अपना प्रभाव छोड़ेगा तथा साथ ही भाषा को इसके विकास के पथ पर अग्रसर करते हुए समाज भी भाषा की कुशलता को स्थापित करेगा।

सन्दर्भ सूची

1. नारंग वैश्ना, *''समसामयिक भाषा विज्ञान''*, यश पब्लिकेशन X/909, चाँद मोहल्ला, गांधी नगर दिल्ली – 110031।
2. शर्मा, रामविलास, *''भाषा और समाज''*, पाँचवाँ संस्करण – 2002, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1 – बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली – 110002।
3. शर्मा, बी.डी., *''भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा''*, ओमेगा पब्लिकेशन, अंसारी रोड़ नई दिल्ली, 2013।

****